प्राथमिक चिकित्सा 14

(वैज्ञानिक लेख)

छुट्टी का दिन था। बरसात का मौसम था। रिमझिम-रिमझिम बूँदें पड़ रही थीं। सौरभ कुछ दोस्तों के साथ मेरे घर आया। कहने लगा–"आज हम सबने पास के पहाड़ पर जाने का *निश्चय* किया है। तुम भी चलो!" ऐसे *सुहावने* समय में कौन सैर को न जाना चाहेगा? मैं भी उनके साथ चल दिया। हम कुल मिलाकर छह लड़के थे। सौरभ हमारी *टुकड़ी* का *नायक* था। वह एक थैला कंधे पर लटकाए हुए था। हम सब खाली हाथ थे। सौरभ के थैले का हमने बहुत मजाक उड़ाया। एक साथी ने तो उसे 'लद्दू' का ही *खिताब* दे दिया।

कूदते-फाँदते हम सब पहाड़ पर जा पहुँचे। वहाँ चारों तरफ हरियाली थी। कहीं फूल खिल रहे थे, कहीं झरने बह रहे थे। एक तो पहाड़, दूसरे बरसात का मौसम और इस पर हल्की-हल्की बूँदों की फुहारें! हमारा मन खुशी से नाच उठा।

इधर-उधर घूमकर हम खाने बैठे। खा-पीकर हम खेल-कूद में लग गए। अचानक मयंक का पाँव फिसल गया और वह बुरी तरह से *जख्मी* हो गया। उसके हाथ-पाँव गहरे छिल गए थे। खून बह रहा था।

वहाँ डॉक्टर कहाँ? हम सब तो *फिक्र* में पड़ गए, मगर सौरभ ने कहा–"घबराओ मत? मुझ लद्दू का थैला कब काम आएगा।" उसने अपना थैला खोला। एक बोतल में से एक चीनी की प्याली में थोड़ी दवा डाली। उसने रुई डुबोई और छिले-फटे घुटनों और हाथों को साफ करना शुरू कर दिया।

धीरे-धीरे सब *जख्म* साफ हो गए। फिर दूसरी बोतल में से दवा निकाली। उसमें कपड़े के टुकड़ों को भिगोया, एक–एक टुकड़ा चोट पर रखा और दोनों घुटनों पर पट्टी बाँध दी। इस तरह से प्राथमिक *चिकित्सा* कर

दी। फिर वहाँ से चलकर हम लोग किसी तरह मयंक को लेकर सड़क के मोड़ तक आ गए।

इतने में एक *सज्जन*, जो मोटर से पहाड़ की सैर को आए थे, उधर से होकर गुजर रहे थे। उन्होंने एक लड़के के घुटनों पर पट्टी बँधी देखी, तो वे उसे अपनी मोटर में शहर ले जाने को तैयार हो गए। हमने मयंक और सौरभ को मोटर में भेज दिया और बाकी सब पैदल लौटे।

सौरभ मयंक को सीधा अस्पताल ले गया। डॉक्टर ने जख्मों की पट्टीयाँ खोलीं, जख्म देखे। उन्होंने पूछा–"घावों की प्राथमिक चिकित्सा किसने की?" सौरभ ने बताया कि मैं अपने थैले में प्राथमिक चिकित्सा का जरूरी सामान रखता हूँ। उनकी मदद से ही यह सब किया है।

डॉक्टर साहब बहुत खुश हुए और उन्होंने सौरभ की *पीठ ठोंकी*। शाबाश! वे कहने लगे– "यदि तुम तुरंत प्राथमिक चिकित्सा नहीं करते, तो तुम्हारे मित्र के जख्म खराब हो जाते और काफी दिनों तक *तकलीफ* का सामना करना पड़ता। अब उसके घाव छह-सात दिन में ठीक हो जाएँगे।"

मयंक जब घर पहुँचा तो उसके माता-पिता ने भी सौरभ को खूब शाबाशी दी। हम सब आज भी सौरभ की *प्रशंसा* करते हुए नहीं थकते हैं।

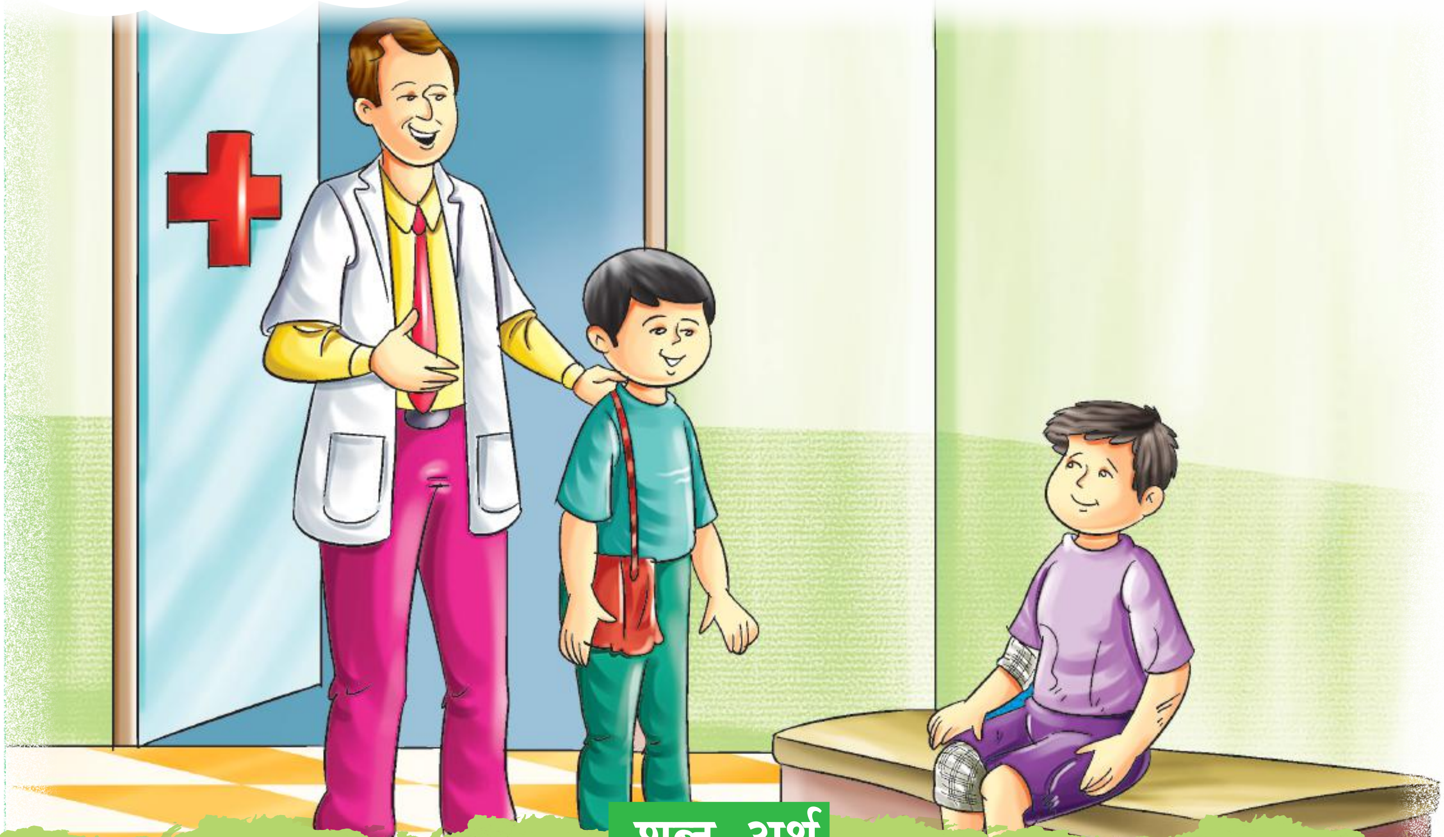

शब्द-अर्थ

निश्चय — तय *(fixed)*,
टुकड़ी — दल *(group)*,
खिताब — उपाधि, पदवी *(honour)*,
सुहावना — सुखद *(pleasant)*,
नायक — नेता *(leader)*,
जख्मी — घायल *(injured)*,

फिक्र — चिंता *(worry)*,
चिकित्सा — उपचार *(treatment)*,
पीठ ठोंकना — शाबाशी देना *(to encourage)*,
प्रशंसा — बड़ाई *(praise)*।
जख्म — घाव *(wound)*,
सज्जन — भला आदमी *(gentleman)*,
तकलीफ — पीड़ा *(pain)*,

अभ्यास

मौखिक

1. इन शब्दों को पढ़कर सुनाइए—

लद्दू	जख्मी	पट्टी	प्राथमिक	चिकित्सा
प्रशंसा	शाबाशी	तकलीफ	सज्जन	पैदल

2. निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए—

(क) सौरभ के दोस्तों ने कहाँ जाने का निश्चय किया?
(ख) टुकड़ी का नायक कौन था?
(ग) कौन घायल हो गया?
(घ) प्राथमिक चिकित्सा किसने की?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए—

(क) छुट्टी के समय कैसा मौसम था?
☐ जाड़े का ☐ गर्मी का ☐ बरसात का
(ख) सैर करने के लिए कितने लड़के गए?
☐ छह ☐ चार ☐ पाँच
(ग) इस टुकड़ी का नायक कौन था?
☐ सौरभ ☐ अमित ☐ मयंक
(घ) सौरभ को उसके साथियों में से एक ने किसका खिताब दिया?
☐ बुद्धू का ☐ लद्दू का ☐ समझदार का

2. वाक्यों को पूरा कीजिए—

(क) सौरभ हमारी .... का नायक था।
(ख) .... हम सब पहाड़ पर जा पहुँचे।

(ग) हमारा .... खुशी से नाच उठा।

(घ) .... के हाथ-पाँव गहरे छिल गए।

(ङ) हम सब तो .... में पड़ गए।

3. सही वाक्यों के सामने (✓) तथा गलत वाक्यों के सामने (✗) का निशान लगाइए—

(क) मयंक सौरभ का सबसे बड़ा दुश्मन था। ☐

(ख) छुट्टी के दिन बरसात का मौसम था। ☐

(ग) सौरभ के थैले में प्राथमिक चिकित्सा का सामान था। ☐

(घ) हम सबने आगरे का ताजमहल देखने का कार्यक्रम बनाया। ☐

(ङ) हम कुल मिलाकर छह लड़के सैर पर गए। ☐

4. सही मिलान कीजिए—

'अ'	'ब'
(क) सौरभ मयंक को	(i) छिल गए थे और खून बह रहा था।
(ख) सौरभ अपने थैले में	(ii) सीधे अस्पताल ले गया।
(ग) डॉक्टर साहब ने खुश होकर	(iii) प्राथमिक उपचार के लिए जरूरी सामान रखता था।
(घ) हम सब आज भी सौरभ की	(iv) सौरभ की पीठ ठोंकी।
(ङ) मयंक के हाथ-पाँव गहरे	(v) प्रशंसा करते नहीं थकते हैं।

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) प्राथमिक चिकित्सा से आप क्या समझते हैं?

(ख) सौरभ और उसके दोस्तों ने घूमने के लिए कौन-सा स्थान चुना?

(ग) सौरभ को लद्दू का खिताब क्यों दिया गया?

(घ) सौरभ ने मयंक की प्राथमिक चिकित्सा कैसे की?

(ङ) यदि सौरभ मयंक की प्राथमिक चिकित्सा नहीं करता, तो क्या होता?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के वर्ण-विच्छेद कीजिए—

(क) प्राथमिक → .... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ...

(ख) चिकित्सा → .... + ... + ... + ... + ... + ... + ...

(ग) रिमझिम → .... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ...

(घ) प्रशंसा → ____ + ____ + ____ + ____ + ____ + ____ + ____

(ङ) घबराओ → ____ + ____ + ____ + ____ + ____ + ____ + ____ + ____

2. पढ़िए, समझिए और लिखिए–

उदाहरण – सब पहाड़ पर जाने की तैयारी कर रहे हैं।

सबने पहाड़ पर जाने की तैयारी की।

(क) मयंक और सौरभ खाना खा रहे हैं।

....

(ख) सौरभ अपने थैले से दवाई निकाल रहा है।

....

(ग) माता-पिता सौरभ को शाबाशी दे रहे हैं।

....

क्रियात्मक गतिविधि

- अपने मित्र को इस पाठ के विषय में पत्र लिखिए और बताइए कि आपने इससे क्या सीखा?

....
....
....

....
....
....
....
....

....
....

- स्कूल के चिकित्सा-कक्ष में से प्राथमिक चिकित्सा-बॉक्स लाकर कक्षा में सबके सामने देखिए और चर्चा कीजिए कि कौन-सी चीज कब काम आती है।
- सामान की सूची बनाकर एक प्राथमिक उपचार पेटी का चित्र बनाइए।

बीरबल की बुद्धिमानी

(चित्रकथा)

केवल पठन हेतु

अकबर ने तुरंत एक सैनिक बीरबल के घर भेजा।
आपको महाराज ने अभी दरबार में बुलाया है।
क्यों? ऐसी क्या जरूरत आ पड़ी है?
तब सैनिक ने सारी बात बीरबल को बता दी।
ठीक है, मैं अभी चलता हूँ।
बीरबल ने कुछ देर सोचा और कौड़ियाँ लेकर दरबार की ओर चल दिए।
बीरबल! ये महाशय अपनी पहेली का जवाब चाहते हैं।
जी, हुज़ूर! आप निश्चिन्त रहिए।
बीरबल ने दूत के सामने कौड़ियाँ बिखेर दीं।

अब दूत बीरबल के सामने बाजरे के दाने बिखेरता है।
बीरबल तुरंत एक मुरगी मँगवाते हैं। मुरगी तुरंत सारे दाने चुग जाती है।
दूत चुपचाप सिर झुकाकर दरबार से चला जाता है। तब बादशाह बीरबल से पूछते हैं—
बीरबल! यह सब क्या था?
हुजूर! वह आपके सिंहासन के चारों ओर रेखा खींचकर यह बताना चाहता था कि उसका राजा हमारे राज्य को घेरना चाहता है।
पर तुमने कौड़ियाँ क्यों फैलाईं?
मेरा मतलब था कि बैठकर कौड़ियाँ खेलो, ऐसा साहस भी मत करना।

जहाँपनाह! दाने फैलाकर वह कहना चाहता था कि हमारे पास हजारों सैनिक हैं।
पर बीरबल! उसने बाजरे के दाने क्यों फैलाए?
तो तुमने मुरगी मँगवाकर दाने क्यों चुगवाए?
मेरा मतलब था कि हम भी कम नहीं हैं। हम तुम्हारे सैनिकों को ऐसे ही मार देंगे, जैसे ये मुरगी सारे दाने चुग गई।
बादशाह और सभी दरबारियों ने बीरबल की प्रशंसा की। बादशाह ने उन्हें प्रसन्न होकर कुछ अशर्फियाँ इनाम में दीं।
वाह! बीरबल! तुमने कमाल कर दिया।